102 - 142

चतुर्थ अध्याय

"अमृतलाल नागर की कहानियों में चित्रित समस्याएं"

चतुर्थ अध्याय

अ) सामाजिक समस्या

1. नारी समस्या
2. निम्नवर्ग की समस्या
3. अंधविश्वास की समस्या
4. प्रेम की समस्या
5. रंग भेद की समस्या

आ) राजनीतिक समस्या

इ) आर्थिक समस्या

ई) धार्मिक समस्या.

निष्कर्ष।

अमृतलाल नागर की कहानियों में चित्रित समस्यांऐं ।

अमृतलाल नागर प्रेमचंद की परम्परा के आधुनिक युग में एक समर्थ दावेदार हैं । हिन्दी के हास्य - व्यंग कथाकारों में अमृतलाल नागरजी का नाम शीर्षस्थ कथाकारों में लिया जाता है । व्यक्तित्व की तरह उनके साहित्य को पहलु भी विविधमुखी हैं । उनका साहित्य सागर कि तरह गहरा एवं विशाल है । जिस तरह सागर की गहराइयों में विविध वर्णिय मछलियाँ होती हैं उसी तरह नागरजी के साहित्य की गहराइयों में विविध वर्णिय समस्याओं का संकलन हुआ है । साहित्य समाज का दर्पण होता है । इसका अर्थ यह है कि समकालीन साहित्य में तत्कालीन समाज का प्रतिबिम्ब नजर आता है । प्रत्येक साहित्यकार समाज से जुड़ा हुआ होता है । उपन्यास, कहानी, नाटक आदि विधाओंके माध्यम से सामाजिक जीवन को अंकित करने का काम साहित्यकार करता है । नागरजीने अपने साहित्य के माध्यमसे समाज तथा मनुष्य के विभिन्न समस्याओं को रेखांकीत करने का प्रयास किया है ।

नागरजी का चिन्तक न केवल समाज के बाहय रुप से जूझता रहा है, अपितु जनमानस में उठते प्रश्नों - संदर्भों व समस्या के प्रति सतर्क रहा है । वे एक जागरुक चिन्तक के रुपेमें सभी कुछ देखते - समझते रहे हैं । समाज में व्याप्त सभी समस्याओं ने नागरजी का अंतरंग बेचैन हो उठता है, उनकी साहित्य की निधि प्रेमचंद की तरह निम्नवर्गीय समाज जीवन पर आधारित है । इस कारण उनके साहित्य में विविधवर्णिय समस्याओं का उत्खनन हुआ है । वे स्वातन्त्रपूर्व तथा स्वातंत्र्योत्तर कालीन समाज में छिपे हुए समस्याओं को प्रस्तुत करते हैं । अपने कथासाहित्य में नागरजीने अनेक समस्याओं को उठाकर उनका विश्लेषण किया है । ये समस्याएँ

सार्वजनीन हैं । इन समस्याओंके विरोधमें उन्होंने अपनी आवाज बुलंद की है । नागरजी मुलतः मानवतावादी कलाकार हैं । व्यक्ति और समाज के बीच पाये जाने - वाले असामंजस्य की जिस मूलवर्ती समस्या को उन्होने उठाया है, उसका समाधान इसी मानवतावादी भूमि पर किया है । नागरजी का कथन है - " व्यक्ति से समाज का निर्माण होता है और समाज द्वारा व्यक्ति का पोषण । व्यक्ति से समाज के समन्वय का यही मूलभूत आधार है ।"[1] वस्तुतः किसी भी कथा कृतिकी वैचारिक भूमिका को सामने लानेवाली समस्याएँ ही होती हैं ।

" स्वतन्त्रता पूर्व और पश्चात का संक्रान्तिकालीन भारतीय अपनी समस्त पीडा और उच्छवासों से नागर - साहित्य में कराह उठा है । जहाँ उन्होंने जीवन को यथार्थ बीभत्सता के निम्नतम स्तर का चित्र खींचा है वहीं वे उसके समाधान के नूतन परिवर्तन के आग्रह का सांस्कृतिक आधार भी प्रस्तुत करते हैं ।[2] आर्थिक स्वातन्त्र, रुढियों के प्रति विद्रोह और बदलते संदर्भ, आयोजित और प्रेमविवाह, नारी स्मस्या, युवा आक्रोष, महंगाई, चोर बाजारी, भ्रष्टाचार, बलात्कार, अकाल, मुद्रास्फीति आदि ने नागर को भी बार - बार चिन्तन - मनन के लिए प्रेरित किया । वे मानव की आस्था, संकल्प,जिजीविध तथा जीवन के अन्तर्बाहय संघर्षों को लेकर कहानी के क्षेत्रमें अग्रसर हुए । नागरजी ने प्रायः मध्यवर्ग को ही अपनी कहानियों का विषय बनाया है । यही वह वर्ग है, जो निरन्तर अर्थ की चक्की में बुरी तरह पिसता रहा है, धार्मिक अन्धविश्वासों ने जिसकी साँस को अवरुध्द कर रखा है। वंश और परिवारगत मिथ्या दम्भने जिसकी कमर तोड़ रखी है धार्मिक रुढ़ियों ने जिसकी बुध्दि को भ्रष्ट कर दिया है ।

सामाजिक विडम्बनाओं ने जिस को कुंठा - ग्रस्त रखा है, और जो अपने अस्तित्व रक्षा के लिए निरन्तर कसमसाता रहा है । नागर ने उसी मध्यवर्ग एवं

पीड़ित वर्ग की समस्याओंका गहराई के साथ अध्ययन किया है और अपनी कहानियों के माध्यम से उसी वर्ग की समस्याओंको उजागर करनेका प्रयास किया है । अमृतलाल नागर ने भी प्रेमचंद के समान मानवीय सम्बधों का मर्मस्पर्शी चित्रण किया है, अन्तर केवल गाँव और शहर का है ।

" नागरजीने नागरिक जीवन को बड़े करीब से देखा है और वहाँ की मिट्ठी की सुगन्ध को पूर्णतः अपने अन्दर बसा लिया है, इस लिए उनके द्वारा उठायी गयी समस्याएँ कीसी विशेष नागरकी न होकर विश्व के नगरों की है ।[3] नागरजी मूलतः सामाजिक यथार्थ वादी हैं और इसी कारण वे समाजमें चित्रित हर समस्या कों ढूंढकर उस समस्या का समाधान खोजने की कोशिश करते हैं ।

स्वातन्त्र्योत्तर कथासाहित्य में जीवन के यथार्थ विश्लेषण को अधिक महत्व दिया गया है । इस युग के कथाकारोंने प्रसाद कालीन कल्पना भूमिको त्यागकर जीवन की हलचल को साहित्य में स्पष्ट रुपसेचित्रित किया, क्योंकी युगकी बदलती और बढ़ती हुई समस्याएँ कल्पनाके सपनों में हल नहीं हो सकती थी । इस युग के साहित्यकार तत्कालीन स्थिति के व्यापक परिमाणों से छूट नही पाए । एक तो यह है कि, जीवन को त्यागकर साहित्य की सर्जना संभव नहीं और जीवन कभी समस्या रहित नहीं होता वर्तमान समय में तो समस्याएँ ही जीवन का पर्याय बन गई हैं । अतः जीवन से संबंधित विभिन्न समस्याओं को साहित्यकार साहित्य में चित्रित करता रहता है ।

अमृतलाल नागरजीने अपनी कहानियों में जीवन की विभिन्न समस्याओं को चित्रित किया है । सुविधा के दृष्टि सेउन्हें हम निम्नलिखित शीर्षक के अंतर्गत रखते हैं ।

अ) **सामाजिक समस्या :-**

मूलतः अमृतलाल नागरजीने अपनी कथा साहित्य में सामाजिक समस्याओं को महत्वपूर्ण स्थान दिया है । इसमें लेखाक ने अन्य गौण समस्याओंका भी विश्लेषण किया है, जो इस प्रकार निम्नलिखित हैं --

।. **नारी समस्या :-**

अमृतलाल नागर प्रेमचंद युग के कहानीकार हैं । उन्होंने प्रेमचंद के समान अपने कथासाहित्य में निम्नवर्गीय एवं पीड़ीत समाज का चित्रण किया है । स्वातन्त्र पूर्व तथा स्वातन्त्रोत्तर कालीन समाज का यथार्थ चित्रण करने में लेखाक ने महत्वपूर्ण स्थान स्थपित किया है । प्रेमचंद की तरह नागरजी ने नारीजीवन को बहुत निकटता से देखा है । नारी के हर पहलु को पहचान कर उनकी हर समस्याका समाधान करने की कोशिश की है।

मनुस्मृती से संस्कारित न स्त्री स्वातंत्र्यं अर्हतिमाननेवास्ते भारतीय समाज में शताब्दियों से उपेक्षित नारी पुरुष के अत्याचारों से पीडित रही । उसके स्वतंत्र अस्तित्व की किसी ने कल्पना तक नहीं की । निर्जीव पदार्थो के समान उसका क्रय विक्रय होता रहा । वह असमर्थ होने के कारण अत्याचार सहती रही । समाज में उसका स्थान ' भोग्यापात्र " रहा । धीरे - धीरे परिस्थिति समाज अत्यन्त तीव्रगतिसे परिवर्तित हो रहा है । इस बदलते समाज में नारी का स्थान महत्वपूर्ण है । पुरातन काल से नारी समस्या का प्रमुख कारण प्रायः आर्थिक पराधीनता था । वर्तमानकाल में नारी शिक्षा का प्रचार होने के कारण आज नारी भी पुरुष के कन्धे से कन्धा लगाकर नौकरी करती

है । उसकी आर्थिक स्थिति में परिवर्तन आ रहा है । फिर भी पुरुष - प्रधान समाज व्यवस्था के कारण नारी समस्या जटिल बनती गयी । आधुनिक युग के लेखकोंने आज की नारी की सामाजिक स्थिती और मानसिकता को बड़ी गहराई से चित्रित किया है ।

सती का दूसरा ब्याह -

प्रस्तुत कहानी नागरजी की ' सिकंदर हार गया " इस कहानी संग्रह में चित्रित है । वर्तमान शिक्षित नारी की स्थिती, परम्परागत बन्धनों के प्रति विद्रोह और नये जीवन मूल्यों को सुन्दर निरुपण इस कहानी में हुआ है ।

" पुरुष के अत्याचारों को सहते हुए घुट-घुट कर नर जानेवाली भारतीय नारी स्वातन्त्रतापूर्व वातावरण में अपने अस्तित्व में अनजान थी, किन्तु पाश्चात्य सभ्यता और शिक्षा ने उसे स्वतन्त्र अस्तित्व दिया है ।"[4] इस कहानी की नायिका किशोरी अग्रवाल अपने पति नारायण प्रसाद के अत्याचारों का शिकार बन गयी है । नारायण प्रसाद विवाह से पहले एक तेज तर्रार नौजवान थे, और सरकार द्वारा पोषित एक पार्टी के सक्रिय सदस्य भी थे । किशोरी अग्रवाल के पिताजी नेवर के गुण और घर की मोटर, कोठी और गल्लेका बड़ा भारी कारोबार देखकर विवाह कर दिया । आझादी मिलनेके बाद नारायण प्रसाद गद्दार सिया की तरह राजनीतिक क्षेत्र से दुबककर बैठे रहें । सब कुछ खत्म हो गया । सरकारने हजारी नोट को अमान्य ठहराया और नारायण प्रसाद का वैभव " पानी के बनते मिटते बुदबुदे सा विलिन हो गया ।"[5] नारायण प्रसाद ने शराब का सहारा लिया और अपनी पत्नी किशोरी पर जुलूम ढहाने लगे । किशोरी यह सब कुछ अत्याचार सहती हुई एक दिन वह हमेशा के लिए अपने पति का घर छोडकर पिताजी के पास चली जाती है और दूसरा विवाह कर लेती है ।

नागरजी नारी को समाज की एक स्वतन्त्र इकाई मानते हैं । उसका बौध्दिक विकास समाज के उत्थान में सहायक है और उसका जीवन मानसिकता के समधरातल पर अपना जीवन साथी खोजने में स्वतन्त्र है ।

सिकंदर हार गया -

प्रस्तुत कहानी में बदलते हुए सामाजिक मूल्यों में भारतीय नारी ने स्वाभिमान के कारण अपने सत्वों और पुरुषों के अत्याचारों के विरुध्द उठाई है । कहानी का नायक जीवनलाल दुराचारी वृत्तिका दास है । उसकी पत्नी भी उसके दुराचारों कीदास बन गयी है क्योंकि वह विवाह से पहले ही जीवनलाल के बच्चे की माँ बननेवाली है । बदनामी से बचने के लिए लीला के पिताने जीवनलाल के साथ अपनी बेटीका विवाह कर देता है ।

जीवनलाल की दुराचारी वृत्ति के कारण वह अपनी पत्नी लीला को हर समय शक की नजरों से देखता है । उसकीहर समय सतीत्व की परिक्षा लेने की वह कोशिश करता हैं । इससे तंग आकर वह अपने पति से बदला लेने की राय तय करती है वह पराए पुरुष से सम्बन्ध का नाटक रचाति है । पति के पूछने पर वह कहती है -- " मगर मेरी बुराई की जड़ भी तुम्ही हो । पराई औरतों की इज्जत बिगाड़ने में मजा आता है ? मैं भी कभी पराई थी, तब कभी उपदेश न दिया ?"[6] उस दिन से जीवनलाल शराब को अपना साथी बना देता है । लीला जब अपना बदला पूरा करती है तब वह अपने पति के सामने रची हुई प्रेम सम्बन्ध के नाटक का पर्दाफाश करती है । अंतमें जीवनलाल स्वयं के अपराधों से जड अपनी पत्नी की सच्चाई से दग्ध होकर अपनी पराजय स्वीकार करता है । वस्तुतः उसकी इसी पराजय में भारतीयता की जय है । नागरजी ने नारी के गौर को सदा अक्षुष्ण रखा है ।

बंदिनी :-

यह कहानी नारी पीडा और स्त्री - पुरुष सम्बन्धों का मार्मिक ढंगसे प्रस्तुत करता है । अपनी स्वामिनी कामिनी खान्ना के विश्वासपात्र होकर भी अपने पत्नी के गुण भुला बैठा है । कंचन और कामिनी के सानिध्यने अपनी पत्नी को अपने ही घर में दासी और उपेक्षिता एवं बंदी जीवन जीने के लिये मजबूर कर दिया किन्तु स्वाभिमानी नारीने अपनी पीड़ा को लोकसेवा की ओर मोड दिया और वह अपनी गली मुहल्लों के बच्चों को मुफ्त शिक्षा देने लगी । उसकी सरलता, ममता और उदारता ने उन्हें अनेक बच्चों की मांजी बना दिया था, यहां तक कि कामिनी खान्ना की बेटी रीताने भी उसे ही माँ मान लिया था । रीता को तीव्रज्वर की अवस्था में मांजी ढेर सारे बच्चों के साथ देखने आई तो उनके पति ने उन्हें अपने ही घर की कोठी में ताला लगाकर बन्दिनी बना दिया । दूसरे दिन रीता तीव्र ज्वर में ही मांजी के पास पहुंचकर बाहर फर्श पर ही अचेत हो गई तो कामिनी खान्नाने उसकी ममता को जादु - टोंनो का नाम दे दिया । नागरजीने इस कहानी में एक उच्चवर्गीय स्वार्थान्ध नारी केवल यश और धन के लिए अपने बच्चे पति को भी भूला बैठती है, तो दुसरी ओर वह नारी है, जो अपना जीवन दुसरों के लिए बिताती है । लेखकने इस कहानी में होनेवाले सामाजिक समस्याका अन्तर्मंथन एवं नारी पीड़ा को मार्मिकता देकर विद्रोह के स्वर को प्रमुखता दी है ।

माँ बाप और बच्चे -

यह नागरजी की सामाजिक व्यंगपर आधारित कहानी है । एक प्रतिष्ठित उच्चवर्गीय परिवार का चित्र इसमें सजीव हो उठा है । कहानी में बच्छराज एक वकील

है जो अपने परिवार को सम्भालने के बजाय रुपये कमाने के पीछे लग रहा है। बच्छराज की पत्नी हर समय सामाजिक कार्यो में व्यस्त रहती है -- " माताओं को अपने बच्चों की नैतिकता को बराबर उँचा उठाए रखने के लिए अपने सुख आराम हर जरुरी कामका त्याग कर देना चाहिए । हमारी राष्ट्रीय नैतिकता गिर गई है इसलिए हमको उसे उठाने के लिए जी - जान से प्रयत्न करना चाहिए । "[7] लेकिन दर असल मिस्टर ॲण्ड मिसेज बच्छराज अपने परिवार का फिक्र नहीं करते । दोनों अपने अपने कामों में व्यस्त हैं । परिवार के बच्चों के देखभाल के लिए वह नौकरानी रखना चाहते हैं । घर पर नौकरानी आने के बाद वह अच्छी तरह देखभाल नही करती, वे बिगड़ने लगते हैं । बच्चों के लिए माँ बाप का प्यार नही मिलता, अच्छी संस्कृति, शिक्षा नही मिलती । इसी कारण बाच्चों के लिए माँ एक समस्या बनकर रह जाती है । इस कहानी में नागरजी ने व्यंग्य रुपमें इस दिखावे और यथार्थ को प्रकट किया है ।

पीपल की परी :-

लेखक ने इस कहानी में एक अनाथ लड़की के जीन पर प्रकाश डालने की कोशिश की है । कहानी में शरबती नाम की लडकी अनाथ है । वह अपना गुजारा दुसरों के बर्तन मांजकर कर लेती है । अब्दुलासेठ की पत्नी शरबती को अपने घर के कामकाजों के लिए रख लेती है । जब शरबती जवानी की दहलीजपार करती है तो लोगोंकी निगाहें उसकी तरफ खींच लेती है । एक दिन अब्दुला सेठ की पत्नी अचानक मर जाती है, और शरबती अकेली रह जाती है । इससे फायदा उठाकर अब्दुला सेठ शरबती को बुरी निगाहों से देखता है और उसे अपना बनाने की कोशिश करता है ।

शरबती अब्दुला सेठ के हाथ नही लगती इसलिए वह ऊसपर जुलूम करता है । उसे भूखी रखता है । इससे वह तंग आकर मरने का नाटक करती है । मर कर शरबती बदला लेना चाहती है, मगर वह गफफ़ार को साथी बनाना चाहती है । गफफ़ार उससे शादी करना चाहता है। दोनों मिलकर आखिर बदला लेने की ठान लेते है । अंतमें शरबती अपने ऊपर अत्याचार करनेवाले लोगों का पर्दाफाश करती है, और ऊन लोंगो को शिक्षा भी देती है । यहाँपर लेखक ने भारतीय नारी के स्वाभिमान के कारण उपने सत्वों और पुरुषों के अत्याचार के विरुध्द आवाज उठाई है ।

2. **निम्नवर्ग की समस्या** :-

अमृतलाल नागरजी की कई कहानियाँ निम्नवर्गी जीवनपर आधारित हैं । उसकी " कहानी यथार्थ को छोड़कर वास्तविक धरातल पर खडी नहीं हो सकती । वह यथार्थ की प्रतिकृति भी है और प्रतिलिपि भी ।"[8] इन कहानियों द्वारा नागरजीने समाज में चित्रित सामाजिक विसंगतियों एवं विकृतियोंपर प्रकाश डालने की कोशिश की है ।

प्रेमचंद की तरह उनकी निम्नवर्गीय कहानियों में अनपढ़ नादान लोगों के जीवन में व्याप्त रुढ़ीवादिता, अन्धविश्वास आदिका चित्रण करते हुए उनपर कठोर प्रहार किया है । नागरजी एक समाजवादी एवं मानवतावादी कलाकार रहे हैं इसलिए वे समाजके हर पहलु को अपने में समेटना चाहते हैं । डॉ.लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय का कथन है -- " वे समाज - कल्याण की भावना से ओत - प्रोत कहानीकार हैं, इसलिए मंगल एवं सत्य के उद्घोषक

है । उनका दृष्टिकोण भी प्रगतिशील है, पर वे यशपाल या दूसरे मार्क्सवादी लेखकों की भांति उस के प्रचारक नही, वरन प्रगतिशील विचारों को जीवन में समान्वित करनेवाले कहानीकार हैं और उन्होंने जीवन में नये पुराने का संतुलन स्थापित करने की चेष्टा की है, जिससे स्पष्ट है, उन्होंने सब का सब नया नही स्वीकार किया है और न सम्पूर्ण पुराना ही स्वीकारा है ।"[9]

अमृतलाल नागरजी की निम्नवर्गीय समाजजीवन पर आधारित निम्नांकित कहानियों में समस्याओं का चित्रण दिखाई देता है ।

मरघट के कुत्ते :-

इस कहानी में असामाजिक कृत्यों का वीभत्स चित्रण अपनी पूरी भयावहता के साथ उस दुनिया का चित्र खींच जाता है, जहाँ जिंदगी से मौत प्यारी है, जहाँ इन्सानियत और जिंदगी अपनी अपनी अर्थ खो बैठती है । जहाँ एक सामान्य मनुष्य का जीवन समाप्त होता है, वहां मरघट में रहनेवालों का जीवन चलित और सक्रिय होता है ।

मरघट में रहनेवाले मांत्रिक, आघोरी और उसके साथ महापात्र, डोम और खिलावत यह अर्धरात्रि के शवों के आसपासके भयावह वातावरण में मुर्दो की हड्डियों कपालों को अपने साधन बनाते हैं । और वे मुर्दों का अन्तिम संस्कार भी करने नहीं देते । मरघट में कुत्तों और सियारों का रोना, हड्डियों का चटकना, जली अधजली चिताओं की राख उडाना सारा वातावरण रोंगटे खड़ा कर देनेवाला है । एक औरत अपने पति की लाश को लेकर आती है । उस गरीब के पास कफ़न नही, लकडी भी नही । चन्द खोटे रुपयों से मुर्दे की लकडी भी नही जुटाती विवश प्राणी भी धन

के बिना अपनी क्रिया नही कर पाता । मगर मरघट का महापात्र उससे रुपयों की माँग करते हुए कहता है -- " जल्दी निकाल, जल्दी मेरे दच्छिना । टके का मुर्दा ससू मेरा बावन रुपयों क दुसाला चल दिया तेरे पीछे । अब जल्दी कर ना ।।" [10]

अमीरों के शवपर चढनेवाले कीमती दुशाले के लिए श्मशान के महापात्र और डोम के बीच छुवाछूत और उँच नीच का भाव भी मिट गया । वहाँ केवल लोभ है । अधिकार न्याय सब व्यर्थ है । मुर्दे कफ़न के लिए लड़ाई और मुर्दोका दुरुपयोग जीवनके कटुतम यथार्थ के अन्धेरे पक्ष को प्रस्तुत करता है । मुर्दों के लिए लकडी देनेवाले तेली जब अपने पुत्र के शव का दुरुपयोग किये जाने से मरघट के वातावरण से भयभीत हो उठा और प्रतिहिंसासे वह अघोरी की हत्या कर देता है ।

मुल्लर की महतारी :-

अशिक्षित लोगों की मनोवृत्ति पर निंदा, अपवाहों के कारण होनेवाली घटनाएँ इसी कहानी में सामाजिक यथार्थ को चित्रित करती हैं ।

कहानी की नायिका महतारी निम्नवर्गीय समाज में रहनेवाली महिला है, और उसी समाज के एक मंदिर की पुजारिन भी उसका बेटा मुल्लर बुरे कामों में बिगड़ जाता है । महतारी की वह एक समस्या बन गया है । वह मंदिर में लगभग पचास-- साठ रुपये प्रति सप्ताह चढ़न की आमदनी को बुरे कामों में खर्च करता रहता हैं । यह मुहल्ले के पढे लिखे लोगों को बर्दाश्त नहीं हो जाता इसलिए वह लोगमंदिर की पूजा का भार उनसे छीन लेते हैं । मंदिर की इसी आमदनी पर पेट भरनेवाली महतारी रोने - गिडगिडाने लगती है । उसपर तरस खाकर लोगों ने उसे रोटी पानी के लिए तीस रुपये मासिक तथा भोग में चढ़ने वाले मिठाई और बताशे

उनके हिस्से में देने का वादा करते हैं । मुल्लर की महतारी अशिक्षित है । आज जब वह पडौसी सलिगराम के घर पुलिस को देखती है और घबराती है और यह समझ बैठती है कि, सलिगराम कोईगजब करके भाग कया है । इस बात को वह समाज में फैलाती है । लेकिन सच तो यह है कि वह पुलिस सलिगराम का लंगोटि यार था और उसे मिलने के लिए आया रहता है । यह सुनकर मुल्लर की महतारी दण्डित हो जाती है । उचित शिक्षा के अभाव में ये घटनाएँ समाज में अस्वस्थ वातावरण उत्पन्न करती हैं ।

देश सेवा शाह मदारों की --

प्रस्तुत कहानी के माध्यम से नागरजी ने अधिकारियों और पुँजि पतियों के भ्रष्टाचार और स्वार्थ को तीखे व्यंग्य से प्रस्तुत किया गया है। " कब्रिस्तान" की भूमि को भी हडपने के दाव पेंच, वहाँ कब्रो को हटाकर निम्नवर्गीय जनता की झूटे अश्वासन देकर खेत, मुहले और बाजार बनवाने की स्कीम चौकानेवाली होकर भी स्वार्थ की चरम सीमापर असम्भव प्रतीत नही होती है ।

शहर के जायदाद के दलाल मुंशी नगरपालिका के सदस्य एवं ठेकेदार लोग समाज के भोले - भोले जनता पर अत्याचार करते हैं । जायदाद हड़पने के लिए इन लोगों ने क्या क्या नहीं किया । ये लोग समाज में जाती भेद वर्ग भेद, हिन्दू मुस्लिम एकता में असंतोष और भी तीव्र कर दिये । लोग यह नही समझ पाये थे कि इसमें दोष किसी का है वह अपने आपमें लगड झगड रहें थे । इसी का फायदा उठाकर ये लोग गरीबों का पिछडापन दूर करने उनको उँचे लोभ में फसाकर उनकी सम्पति के स्वयं मालिक बनकर ये लोग स्वार्थ साधते हैं और पिछडापन दूर करने के नाम पर मरी हुई लोगों को शाह प्रदान बनाकर मारते हैं ।

अन्धविश्वास की समस्या :-

अमृतलाल नागरजी मूलतः स्वातंत्र्यपूर्व लेखक हैं । उन्होंने मध्यवर्गीय शहरी जीवन को अपने साहित्य का केंद्र माना है । प्रारंभ में शिक्षा का प्रसार नही था इसलिए लोग अज्ञान एवं अशिक्षित थे । इस अज्ञान एवं अशिक्षित को समाज के साथ साथ उनके कलम द्वारा साहित्य में स्थान मिला । नागरजी ने समाज की हर स्थिति, हर अंग, हर वर्ग को अपने साहित्य में उतारा है । इनकी हर कहानी सामाजिक यथार्थ पर ही अवलंबित रही है । डाक्टर सुमनकुमार ' सुमन' का कथन है -- " नागरजी की कहानियों में विभिन्न सामाजिक अनुभव उभर कर आये हैं, अतः यह कहा जा सकता है कि, इनकी सभी कहानियाँ सामाजिक यथार्थ पर ही आधारित हैं । लेकिन इनकी दृष्टि शहरी जीवन पर अधिक है ।"

हमने निम्नांकित कहानियोंमें नागरजी ने अन्धविश्वासों का प्रभावशाली ढंग से चित्रण किया है ।

दफीने की खुदाई :-

यह कहानी मनुष्य की सहज प्रवृत्ति अफवाह उडाने एवं धन लिप्सा पर आधारित है । इस प्रवृत्ति को भारतीय समाज की धार्मिक मनोभूमि एवं अन्धविश्वासों पर खड़ा किया गया है । नागरजी की प्रस्तुत कहानी अफवाहों पर विश्वास रखनेवाली जनतापर आधारित है ।

दफीने की अफवाहों से सारे शहर में शाही खजाना खुदने लगा । " हमारे मुहल्ले में अजी शहर के कोने कोने में हर शख्स, जिसके पास भी दादाई जायदाद थी, यह सोचने लगा कि हो न हो हमारे घर में भी करोड़ नही तो लाख अशर्फियों का

घडा जरुर गडा है ।"[12] घर घर में जन्मपत्रियां खुलने लगी पंडित मौलवियों के घरों की चौखटें अपने अपने घरों के दफीनों का हाल जाननेवाले को आवाजही में घिस गई, सरकार का दफ्तर गडा धन खुदवाने वालों की अर्जियों सेपट गया औरहम बैठे बैठे मजा लेते रहें ।

एक दिन लेखक की पत्नी के ख्वाब मौलवी अकर कहने लगे - - " इसके नीचे तांबे के दो देग गडे हैं, एकछोटाहै, उसमें चार लाख के जवाहरात हैंऔर जो बडा है, उसमे एक लाख मोहरे हैं । ये तेरे भाग की हैं, तू ले ले । फिर सैयद बाबा ने मेरे सिर पर हाथ फेरा और बोले कि जा तेरा घर राजमहल बन जाएगा ।"[13] यह सुनकर लेखक आचरज में पढ़ गये और वे भी खुदाई शुरु करते हैं लेकिन अतः में उन्हें तो क्या सारे शहर में किसी को भी गडा घड़ा नही मिला। इसी अंधविश्वास को लेखकने इस कहानी द्वारा जिंदा किया है ।

कयामत का दिन :-

प्रस्तुत कहानी में निम्नवर्गीय मुस्लिम समाज के अंधविश्वासों का यथातथ्य चित्रण है । अंधविश्वास और रुढियाँ मनुष्य को मूर्ख और बदहवास बना देती है । कादिर मियाँ ने स्वप्न में खुदा का संदेश सुना की -- " अमां कादिर तुम दुनिया के भोले भोले बाशिन्दो को मेरा यहइलहाम सुना दो कि कल जुमेरात के दिन शाम की नमाज के बाद मैं आऊँगा और उसी वक्त तमाम लोगोंसे मिलकर कयामत का दिन मुकर्रर करुँगा ।"[14] यह सुनकर कादिर मियाँ सुबह में जल्दी उठकर पीले रंग में कुर्ता और लुगी रंग डाली और पहनकर संदेश सुनाने घर से निकल पड़े

रास्ते में उन्हे बकरीदा मियाँमिलते हैं और दोनों में किसी बात से वादावाद शुरु होता है । बकरीदा मियाँ कादिर मिया को धर तरफ ढकेलते हैं कादिर मियां को रंगे हुए कपडे देखकर लोग यह सोच बैठते हैं कि सचमूच कादिर मिया फकीरी बनकर घर छोडकर चल पडे हैं । यह सब हवा की तरह शहर भर भीड हो जाता है और कादिर मिया के घर में लोगों की भीड हो जाती है । सभी नारियाँ कादिर मियां की पत्नी फातिमा को नोचते हैं, की " ऐ नौज बीबी, ऐ वो निठल्ला क्यों ? सैंकडो लाखों से अच्छा कमाता है । और यह भी नही कि उसे काई बुरीलत हो । मै तुझ से सच कहता हूँ बहन, ऐसा समझदार लड़का हमारे मुहल्ले भर में क्या, शहर भर में कोई नही ।"[15] अंतमें कादिर मिया ने लोगों से सब कुछ बताता है इससे उसकी पत्नी फातिमा को तसल्ली मिलती है ।

जन्तर मन्तर :-

प्रस्तुत कहानी द्वारा लेखक ने निम्न वर्गीय समाज का व्यक्तिगत जीवन का चित्रण किया है । इसमें जन्तर मन्तर द्वारा चमत्कारिक रुपसे अशिक्षित और गरीब लोगों को ठगना इन लोगों के लिए सामान्य बात है, इसी जन्तर मन्तर का चमत्कार अन्धविश्वासकी माध्यम से इस कहानी द्वारा प्रस्तुत किया है ।

कहानी में कादिर मियाँ और पीरबख्स दोनों बर्फ बेचते रहते हैं । पीरबख्सने सस्ते में बर्फ बेचने से कादिरमियाँ ताब में आकर उससे नोका झोंकी करते हैं । लेकिन कादिरमियाँ पीऊ पहलवान से डरते हैं । घर आकर कादिमियाँ दिनभर सोचते हैं और मौलवी साहब के पास जाकर उनसे ताबीज करके वह पीरु से बदला लेना चाहते

हैं । मगर इसके लिए कादिर मियाँ को कुछ रुपयों का खर्च था । वे रुपये खर्च करते हैं । मौलवी साहब जो चीजें उन्होंने मंगाई हैं वे सब लाकर देते हैं । कादिर मियाँ मन ही मन सोचते हैं कि ताबीज मुझे मिल गई तो मैं पीरु से निपटा लूंगा । लेखिन कादिर मियाँ को मालूम नहीं कि यह जो मैं कर रहा हूँ यह सब गलत है । वे अन्धविश्वासों के छाया धसे हुए हैं । अतः कुछ भी नहीं हुआ । लेकिन कादिर मियाँ को मार पड़ी । इन्सान अफवाहों एवं अनधविश्वासों के सहारे अपने ख्वाब जरुर रंगीन करता है लेकिन उसे यथार्थ में सत्य पाना बड़ा मुश्किल होता है ।

4) **प्रेम की समस्या :-**

सदियों से चलता आ रहा यह प्रेम आज भी जिंदा है और कल भी रहेंगा । जब समाज का निर्माण हुआ तब प्रेम की उत्पत्ति हुई । नागरजीने अपनी कहानी साहित्य में प्रेम की समस्याओंपर आधारित बहुतसी कहानियाँ लिखी हैं । उनमें से कई कहानियों की हम यहा चर्चा कर रहे हैं ।

मोती की सात चलनियां :-

प्रस्तुत कहानी में नागर ने अन्तर्जातीय प्रेम और विवाह की समस्या को यथार्थ दृष्टिसे देखा गया है । इसके साथ ही हिन्दू मुस्लिम एकता को सहज और सरल रुप में प्रस्तुत किया है ।

" इन्सान की अहमियत भीतरी तहों में एक है, किन्तु इनपर मजहबों के अलग अलग रंग के मुलम्मो ने उसको नकली बना दिया । भारत में हिन्दू मुसलमानों का संघर्ष सदा जग जाहीर रहा, किन्तु उनके भाई चारे की समान धडकनों को सदा नकारा गया ।" [16]

कहानी में डाक्टर निगार मुस्लिम समाज के प्रोफेसर अख्तर हुसैन की बेटी है । वह डाक्टरी पढ़ रही है । उनके घर में सारे लोग अपने अपने जिम्मेदारियों में मस्त हैं । लेकिन डाक्टर निगार मुस्लिम समाज की लडकी होकर हिन्दू लड़के के साथ प्रेम करती है । और उसके साथ विवाह भी करना चाहती है । डाक्टर सुरेन्द्र मोहन इसी शहरके मशहूर डाक्टर श्याम मोहन का लड़का है । डाक्टर सुरेंद्र मोहन भी डाक्टर निगार को बहुत चाहता है । दोनो विवाह करने के लिए किसी से इजाजत नही लेते । डाक्टर निगार के पिताजी प्रोफेसर अख्तर हुसैन और डाक्टर सुरेंन्द्र के पिताजी इस विवाह को इन्कारते हैं । यही समस्या दोनों को सोचनेपर मजबूर कर देती है । डाक्टर सुरेन्द्र पिताजी को समझाने की कोशिश करते हैं । दोनों में नोका झोंकी होकर बात बढ़ती है और सुरेन्द्र घर छोडने की बात करता है । लेकिन पिताजी इस विवाह को अधर्म मानते हैं तब डाक्टर सुरेंद्र अपने पिताजी से कहते हैं कि, --"यही कि हम भारतीय हैं । इन्सानियत के सिध्दांन्त, ईमानदारी, मेहनत, सच्चाई , दया करुणा वगैरा जितना कोई भी कटट्र हिन्दू या मुसलमान मानेगा उतना ही हम मानते हैं । बाकी क्रिया कर्म, जनेऊ, नौरात्र, मुहर्रम वगैरह पूजा पाठ, धर्म कर्म का पुराना बोझ हम क्यों लादें? इन से हमें मिलता ही क्या है ?"[17] अंतमें दोनों का विवाह होस्टेल में भारतीय रिति- रिवाजों के अनुसार धूमधाम के साथ सपन्न होता है । धर्म और मजहब के संकीर्ण दायरों से निकलकर मात्र केवल एक मानवता का धर्म ही उचित है । इसी मानवता के सामाजिक पक्ष का अंकन इस कहानी में हुआ है ।

मन के संकेत :-

यह नागरजी की काल्पनिक तानो बानों से बुनी हुअी कहानी है, जिसमें अगाध प्रेम एवं संवेदना के कारण मन की एकाग्रता का चित्रण है ।

कहानी की नायिका रोहिणी अपने पडौसी शिशुपाल सिंह से प्रेम करती है । अपनी माँ की अंतिम इच्छा पूरी करने के लिए उस्से विवाह कर लेती है । यह बात शिशुपाल सिंहके चाचा ठाकुर ब्रजराज सिंह को पसंत नही । इसलिए शिशुपालअपनी पत्नी को लेकर यहाँ आकर रहने लगे । यहाँ आने के बाद शिशुपाल सिंह अक्सर उदास और अनमने रहने लगें । यह बंगला उनके चाचा काथा । एक दिन शिशुपाल सिंह अपनी पत्नी रोहिणी को छोड़कर चले गये जो आजतक नहीं आये । अब रोहिणी एक बच्चे की माँ है । एक दिन ब्रजराज सिंह द्वारा रोहिणी को घर से निकाला जाता है । यह राजकिशोर बाबू को सहा नहीं जाता । वह रोहिणी को बेटी की तरह मानकर अपने शरण में लेकर घर ले आते हैं । राजकिशोर बाबू एक स्वतंत्र सेनानी हैं । वे रोहिणी को न्याय देना चाहते हैं । यह सुनकर ब्रजराज सिंह राजकिशोर बाबू घर आकर सतीत्व जैसी बहुपर रंडी कहकर कीचड उछालते हैं और उसे घरसे निकालने को कहते हैं ।

राजकिशोर बाबू इस बात को इन्कार करते हैं । उसी दिन रोहिणी के बच्चे को तेज बुखार चढ़ जाता है । रोहिणी को अपने बच्चे के ज्वर में पति की छाया दिखाई पडती है । उसे लगा कि उसका पति बीमार है । वह उठकर चलने लगती है मानो किसी के मेस्मेरिज्म की शक्ति उसे चला रही हो । अपने बच्चे और दीन दुनियां की तरफ से एकदम बेहोश है । उसे लगता है उसका पति उसे बुला

रहा है । आखिर यह पति के पास पहुंचती है और देखती है कि सचमुच पति बीमार है । इसी रहस्य को लेखक ने काल्पनिक तानों बानों द्वारा यथार्थ रुप दिया है ।

मायामोह :-

नागरजी ने प्रस्तुत कहानी द्वारा निम्नवर्गीय लोगों के जीवन पर प्रकाश डालने की कोशिश की है । इस कहानी में अपंग लोगों के जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है ।

कहानी की नायिका श्यामकली देवी भक्तिन समाज की एक महिला है । वह अपनी बच्ची को बहुत चाहती है । उसकी बच्ची कानो है । एक ऑख से देख नही सकती मगर श्यामकली देवी उसे अपनी एक ऑख देना चाहती है । बच्चा दूसरे की नजरोंसे कितना भी गिर सके तो भी वह बच्चा अपनी माँ को हर स्थिति में अच्छा लगता है । श्यामकली देवी के इस मायामोह पर समाज के लोग हसते हैं, मगर वह किसी की नही सुनती । इसी अगाध प्रेम एवं मायामोह को लेकर लेखक ने इसे और भी रंगीन बना दिया है । समाज के लोग इस मायामोह से श्यामकली देवी को नोचते हैं पर उन सब बातोंपर अनसूनी करके श्यामकली देवी कहती है, " उह, हमे तो सच्ची मानना झम्मो की महतारी, गुरुजी की किरपा से इत्ता सा भी मायामोह नही रह गया है । मैं तो कहूं जिसने लड़की दी उसने सब कुछ दिया ।"[18] यह सब मायामोह और वैराग्य भाव भक्तिन समाजमें रोज ही उठता गिरता रहता है । इसी कारण यह प्रेम एक समस्या बन गयी है ।

जुलाब की गोली :-

इस कहानी मे नागरजी ने समाज में चित्रित आशिक मिजाजों एवं रसिक लोगों का वेश्या के प्रति प्रेम का दृश्य खड़ा किया है । स्वतंन्त्रता पूर्व भारतीय समाज विशेषतः लखनवी मुस्लिम समाज कोठेवालियोंके पास जाता था । दूसरी और घरवालियों के इख्लाक का गुनगान करता था । घरवाली को 'जुलाब की गोली' की संज्ञा दी जाती थी ।

कहानी में नवाब गुल्लन किसी एक वेश्या के प्रेम का शिकार बन चुका है । घरमें उसकी छुन्नन नामक पत्नी भी है । लेकिन गुल्लन के दिल में उस वेश्या के प्रति जितना गहरा प्रेम है उतना वह अपनी पत्नी पर नहीं करता, क्योंकि उसे वेश्याकी अदाएं, उनकी चालढाल शृंगार होठों की लाली यह सब पत्नी से भी जादह पसंद है । गुल्लन कभी कभी वेश्या के पास आने के लिए पत्नी से रुपयें की मांग भी करता है लेकिन पत्नी से उसे सिर्फ गालियां एवं शिकायतें मिलती थी रुपये नही। यह समस्या उन के लिए बन गई है, जो वेश्यायोंके पास जाते थे । उन दिनों नवाबों का समय था । नवाब लोग अपने दिल की तसल्ली के लिए वेश्याओं के पासजाते थे । नागरजी ने इस कहानी में लखनवी में चित्रित नवाबों . वर्गका चित्रण किया है जो अपनी सम्पूर्ण जिंदगी एक नवाबों की तरह जी रहें थे । इसमें लेखकने वेश्या के प्रेमके प्रति निष्ठा का चित्रण किया है ।

5. **रंग भेद की समस्या :-**

अमृतलाल नागरजीने अन्य समस्याओं के साथ साथ रंगभेद की समस्याओंका भी सृजन किया है । नागर की 'सिंकंदर हार गया' इस कहानी संग्रह में "एक था

गांधी" इस कहानी में यह समस्या उभरकर आयी है ।

एक था गांधी :-

यह अमृतलाल नागरजी का सुन्दर, विशिष्ट एवं अनोखा प्रयोग है । लेखक ने इस कहानी में रंग सम्बन्धी प्रतीकों को लिया है । डॉ. सुदेश बत्रा के अनुसार " आज के संसार में गोरे काले और पीले रंगों का जो आशय है, वह किसी से छिपा नही है । इन शब्दो के प्रयोग से कहानी में से कटुता का अंश निकल गया है और रसका समावेश हुआ है ।"[19]

कहानी में गाधी सूर्यदर्शी हैं -- सूर्य, ज्ञान और प्रकाश का प्रतीक है । गांधीने न्याय का स्वर बुलंद किया और वर्गभेद मिटाने का यत्न किया । अन्याय मिटाते हुए वह कहते हैं, " सबरंग एक समान । काया के पिंजरे चाहे जितने रंगो के हो पर मन का पंछी तो सब में एक जैसा है फिर ऊंच नीज कैसा, छोटा बड़ा कैसा, राजा रजा कैसी "?[20] वे अन्याय को न्याय से जीतना चाहते हैं । गांधीजीने सत्य अहिंसा अपने हथियार बनाये । काले हिन्दुस्थानी और गोरे अंग्रेजों ने न्याय का पाठ पढ़कर दुनिया की नीति अपनाई और सोने का पीला रंग सर्वोपरि हो गया । इसके बाद प्रेम काला रंग आगे आया । सभीने अपने अपने मन्तव्य स्पष्ट किये । जब गांधी की बात सिध्दान्त बन गई तब वह इन्सान से देवता बन गया, और देवता पत्थर के होते हैं, बोलते नही, न्याय अन्यायपर प्रवचन नही देते, इसलिए अधर्म ने उसका मुंहबंद कर दिया ।

गांधीजी की न्याय और आदर्श की बातें केवल गांधीवादी सिध्दान्त रह गये । डॉ. बत्रा के अनुसार "नागरजी मानवता प्रेमी हैं और मानवता के स्थायित्व

में उनका अटल विश्वास है, गांधीजी का न्याय मानवता प्रेमी है और मानवता का न्याय है । उनका स्वर अमर है । नागरजीने जीवन दर्शन को मानवता की विजय में प्रतिष्ठित कर दिया ।"[21] लेखक इस कहानी में रंगों के प्रतिवर्ग भेद मिटाने की कोशिश की है और यही वर्ग भेद एक समस्या बन गई है ।

(आ) **राजनीतिक समस्या :-**

अमृतलाल नागरजी अपने कहानी साहित्य में राजनीतिक क्षेत्र को बहुत महत्वपूर्ण स्थान दिया है । स्वातंत्र्य पूर्व तथा स्वातंत्र्योत्तर कालीन राजनीतिको अपने कलम के सहारे नागरजीने अपने साहित्य में जखड़ रखा है । इसी राजनीति के क्षेत्र में घटनेवाली घटनाएँ अन्याय, अत्याचारों को नागरजीने स्वयं देखा है और उसे सँवार ने की कोशिश भी की है क्योंकि वे पहले सुधारवादी एवं मानवतावादी लेखक हैं, इसके बारे में डा. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय का कथन है -- " नागरजीकी मूल विचारधारा वस्तुतः सुधारवादी हैं और वे मानवतावाद एवं व्यापक आदर्शवाद के समर्थक हैं, पर इसके लिए उन्हे उपदेशक का मुखौटा लगाने की आवश्यकता नही पडी है। । उनके पास कलात्मक कौशल्य है, जिसके माध्यमसे उन्होंने अपने उद्देश्य को बडी सूक्ष्मता से पूर्ण करने की चेष्टा की है ।"[22] विश्व राजनीति से प्रेरित घटनाएँ मानवके सामाजिक जीवन को प्रभावित करती हैं ।

राजनीति के सत्तामद के कारण एवं उसके आव्हान पर राष्ट्रीयता के विभिन्न सन्दर्भ देशके इतिहास में बन जाते हैं । राजनीति, स्वार्थ अथवा महत्त उद्देश्य से प्रेरित होती है । और संवेदनशील मानवता मनुष्य के भीतर स्थित सत को जागृत करनेका पयत्न करती है । नागरजीकी निम्नांदधृत कहानियों में अपनी विशिष्ट चेतना, विशिष्ट राष्ट्रीयता, राजनीतिक, सामाजिक कुरीतियों पर व्यंग्य एवं मानव

की आत्मिक प्रवृत्तीयों के सहज पहलुओं का अंकन है ।

सती का दूसरा ब्याह :-

इस कहानी में वर्तमान शिक्षित नारी की स्थिति, परम्परागत बन्धनों के प्रति विद्रोह और नये जीवनमुल्योंका सुन्दर निरुपण हुआ है ।

कहानी की नायिका किशोरी अग्रवाल नगर में प्राईवेट प्रॅक्टिस करनेवाले प्रसिध्द डा. मनोहरदास की जेठी बेटी है । किशोरी डाक्टर बनना चाहती है, मगर पिताजी उसकी शादी एक बडें तेज तर्रार नौजवान नारायण प्रसाद के साथ कर देते हैं । इन दिनों दूसरी लड़ाई का जमाना था । देश की वास्तविक शक्तियां ब्रिटिश राज्य कीजेलों में बंदथी सो नारायण प्रसाद सरकार द्वारा पोषित एक पार्टी के सक्रिय सदस्य हो गए । नारायण प्रसाद भाषण जोरदार करते थे, दैनिक पत्रों में सम्पादकों के नाम पत्र भी अस्कर लिखा करते थे। "मगर मेरे मन कछु और है कर्ता कछु और वाला हिसाब हो गया ।"[23] नारायण प्रसाद का मन शीघ्र ही किशोर से भर गया । बाहर नेतागिरी में कई लड़कियों का साथ था, चुलबुली शेख, अनबेली, चोंचले बाज माशुके थी । जेब में पैसा था, कुछ बाप का कुछ सरकारी जो नाजी विरोधी सन 42 के आन्दोलन प्रचार कार्य केलिए पाते थे । दूसरी लडाई के समाप्ति के बाद नारायण प्रसाद गदद्ार सियार की तरह राजनीतिक क्षेत्र से दुबककर बैंठ गये ।

कुछ दिनों बाद आझादी आई दंगे हुए हजार के नोट को सरकार अमान्य ठहराने से नारायण प्रसाद के पिताजी की गुप्त तिरोजी बंद कई लाख के हरी नोट पुडियां बाँधने के कागज मात्र रह गये । इसतरह उनका वैभव खत्म हो

गया । सब कुछ खत्म हो जाने के बाद नारायण अपनी पत्नी किशोरी पर अत्याचार करने लगता है । यह अत्याचार किशोरी को सहा नही जाता और वह पति से हमेशा के लिए सम्बन्ध तोडकर पिता के घर आती है । लेखक ने इस कहानी में उन लोगोंपर व्यंग्य किया है, जो राजनीतिक क्षेत्र में रुपये कमाते हैं,लेकिन वक्त आने पर सब कुछ अपने दांवपर लगाते हैं ।

एटम बम :-

यह नागरजीकी संवेदना प्रधन मानवताका गहरा स्वर प्रस्तुत करनेवाली कहानी है । नागरजीने इस कहानी द्वारा इस देश की रानीति के साथ साथ सारे विश्व का भी विचार किया है । इस कहानी में एटम बम गिरनेपर होनेवाले सामूहिक संहार का दृश्य सजीव हो उठा है ।

कहानी का नायक कोबायाशी इस बम का शिकार हो चूका है । जहां पानी की एक बूंद का अभाव उसे मृत्यु के मुंह में धकेल रहा है । नागासकी और हिरोशिमा जैसे शहरोंपर बम डालकर वहाँ की मासूम लोगोंकी हत्या करना अत्याचार है । वहाँ की सामूहिक जनता चीख रही है । चारों ओर से जहरीले धुएं के गुब्बार में यही शोर गूंज रहा है । 'मुझे क्यों मारा, मुझे क्यों मारा'? ऐसा लगता है कि, मानो उस समय के चित्रको नागरजीने इस कहानीद्वारा फिर से जिंदा कर दिया है । राजनीति के इस विध्वंसक रुपने मानो काली भयानक रातोंने निगललिया हो । हर तरफ मौत का तांडव खेल रहा था । इसी मौत के साये में रहकर कोबायाशी सोच रहा है " मैंने ऐसा कौनसा अपराध किया था जिसकी मुझे मिल रही है ? अमीरों और

अफसरों को छोड़कर कौन ऐसा आदमी था जो यह लड़ाई चाहता था ? दुनिया अगर दुश्मनी निकालती तो उन लोगों से । हमने उनका क्या बिगाडा था ? हमें क्यों मारा गया ? ... प्यास लग रही है । पानी न मिलेगा । ऐसी बुरी मौत मुझे क्यों मिल रही है ? ईश्वर मैंने ऐसा क्या अपराध किया था ।"[24] नागरजी की जीवन के प्रति आस्था और मानवता का जय अटल है ।

जय पराजय :-

नागरजी ने प्रस्तुत कहानी में आर्थिक समस्या के साथ साथ सामाजिक व्यंग्य की मार्मिकता का गहरा पुट दे दिया है । " जय पराजय" यह कहानी भारतीय राजनीति, देशभक्ति और नेतागिरी का एक सजीव चित्र है । कहानी में लेखक का व्यंग्य सोद्देश्य होने के कारण चेतनापर पैना प्रहार करता है । प्रस्तुत कहानी में स्वातंत्र्यपूर्व दशाका चित्रण है ।

कहानी का नायक शिवनाथ अगस्त क्रांति का नेता है । वह जनता का हीरों है । जनता के भलाई के लिए जेल चला जाता है और आग आगुआ बनकर पूरे साढ़े तीन वर्षों की कैद से बाहर निकला है और जनता अपने प्रिय नेता के स्वागत के लिए टूट पडी है । फूलों के हार, चार घोंडों की फ़िटनपर नगर में जुलूस, अखबारों के लिए फोटोग्राफरों के चित्र नगर के धनी मानी सेंठों द्वारा स्वागत इतना गौरव और सम्मान उसे संकुचित कर देता है, लेकिन वह यह भूल गया है कि उसके पिछे एक आर्थिक थपेडों से घिरा एक परिवार है, बच्चे हैं । एक बार इन्सान राजनीति के गहराईयों में धस गया तो वह उसे जिन्दगी भर छोड़ नही सकता । शिवनाथ के पीछे भी एक टूटती जिंदगी का यथार्थ नग्न चित्र है । वह जनता का नेता एक साधारण गृहस्था भी है । उसके परिवार को उसकी पहले जरुरत है । जिस परिवार को असहाय

और अपनी पत्नी को गर्भवती हालत में छोड़कर जतना के हितों के लिए वह जेल चला गया, वह जनता जेल से बाहरनिकलते ही उसका स्वागत कर सकती है, किन्तु साढे तीन वर्षो तक उसका परिवार आर्थिक थपेडों से ध्वस्त हो गया है । उसके पीछे जन्म लेनेवाला शिशु आर्थिक अभावों में उसके आनेसे पहले ही दम तोड़ चूका था ।

14 एप्रिल :-

यह नागरजी की स्वातंत्र्यपूर्व कालीन कहानी है । इसमें स्वातंत्र्यपूर्व द्वितीय विश्वयुध्द के समय को रेखांकित किया है । अंग्रेजी राज में घटनेवाली एक घटना का जीवंत चित्र खींचा गया है । धन की अन्धी दौड में दुनिया भागती है, बरबाद होती है और फिर बनती है । इस क्रम में मनुष्य का स्वार्थ पनपता रहता है । स्वार्थ वृत्तिसे प्रेरित चौदह एप्रिल की घटना का सजीव चित्र इसमें प्रस्तुत है ।

बम्बई के बन्दरगाह में गोले बारुद से भरे जहाज को आग लगा दी गई और सारा बम्बई महानगर हिल उठा बसे उलट गई उँची उँची इमारते गिर गयी सैकडो लोग जख्मी हो गये किन्तु दो-दो तीन-तीन रुपये के किराये पचास साठ तक पहुँच गए । मुख्यतः 14 एपैल की घटना बारुद के जहाज का फटना वर्तमान महायुध्द और अंग्रेजों कें प्रति भारतीयों की भावना का संकेत मार्ग था । नेताजी सुभाषचंद्र बोस जापान में आझाद हिंद फौज का संकलन कर रहें थे । अतः देश भक्त भारतीयों

में बढ़ी राष्ट्रीयता अंग्रोजो को हर प्रकारसे संत्रस्त करने पर तुली थी । घटनाएँ अफवाहें बनकर संभावनाओं का रुप लेती थी । नागरजी ने राजनीतिक व्यंग्य और आमजनता की मानसिकता का अच्छा चित्र खींचा है " निष्क्रिय भक्ति के दीवाने चमत्कारिक रुप से देश की आझादी का सपना देख रहे थे ।"[25] नागरजी ने हर रंग की कहानी को बेलाग होकर प्रस्तुत किया है । इस कहानी द्वारा लेखकने अंग्रेजों के प्रति भारतीयों की तीव्र संतप्ति व्यक्त की है । डाक्टर सुदेश बत्रा के अनुसार " चौदह अप्रेल की घटना मनुष्य की हिंसा की प्यास बुझाने के लिए कई बार आवृत्त होती है, परंतु हिंसा की ज्वालाओं के साथ ही नई राजनीति चल पडती है ।"[26]

इ) **आर्थिक समस्या** :-

अमृतलाल नागरजी की बहुत सी कहानियाँ आर्थिक समस्या के उपलक्ष्य में उजागर हुई हैं । नागर ने अपनी कहानी साहित्य का पहलू मूलतः मध्यवर्गीय लोगों के जीवनपर आधारित है । प्रायः आर्थिक स्थिति मध्यवर्गीय लोगों की प्रधान समस्या होती है । आज इस दुनिया में ऐसे कई लोग हैं जो रुपयों को किस तरह खर्च दिया जाय यह सवाल उनके सामने खड़ा होता है और दूसरी तरफ वे लोग हैं, जो भूखे दिन गुजारते हैं । आज रुपयोंके लिए इन्सान इन्सानियत से गिर सकता है । किसी का खून भी कर सकता है । इससे समाजमें विसंगतियाँ निर्माण होती हैं । नागरजी ने इन्हीं सत्यों को अपने साहित्य में यथार्थ रुपमें स्थान दिया है । लेखकने मध्यवर्गीय जीवन में चित्रित जो समस्याएँ उभरकर आयी हैं उन्हें उनहोंने एक विशेष कोटी में रखने की कोशिश की है ।

आर्थिक समस्याओंपर आधारित कहानियों में नागरजी की निम्नलिखित कहानियां उजागर हुई हैं ।

रोजमरहि :-

अमृतलाल नागरजीने इस कहानी में शहरी लोगों के जीवनपर प्रकाश डाला है । प्रस्तुत कहानी द्वारा लेखकने यह कहने की चेष्टा की है कि लोग शिक्षित होकर भी दो वक्त की पेट की भूक नही मिटाते । ये डिगरियाँ ये सर्टीफिकेट सिर्फ नाम के लिए ही रह गये हैं । इसी सत्य को साकार करना इस कहानी का उद्देश्य है ।

इस कहानी का नायक मिस्टर गिरधर गोपाल उर्फ डाक्टर जम्फर हर रोज अपनी पत्नी के सामने एक नया स्वाँग करके उससे रुपयों की मांग करता है और नौकरी तलाशने चला जाता है, मगर उसे कोई नौकरी नही मिलती । एक दिन डाक्टर जम्फर को नौकरी मिलने की झूठी खबर लेकर घर आता है । पत्नी बहुत खुश होती है । जब तनख्वाह का दिन आता है तो वह झूठी तसल्ली देता है । जब यह राज पत्नी को मालूम हो जाता है तो वह उसपर बरसती है और कहती है, "क्यों जी तुम झूठ बोलते हो । तुमने पांच रुपये ठगने के लिये इतना बड़ा जाल रचा ? मुझे सब मालूम हो गया है, तुम डाक्टर फर्निचर पट के यहाँ दिन भर बैठे रहते हो... ।"[27] दूसरी ओर डाक्टर मक्खनलाल हैं । उसकी भी हालत वही हुअी है । मक्खनलाल डाक्टर रहते हुए भी उसे पेट भरना मुश्किल हो गया है । उसके पास कोई रोगी नही आता । इसलिए दोनों इस जीवन से तंग आ चूके हैं । इससे हल ढूंडने के लिए दोनों हर रोज मिलते हैं, वक्त बरबाद होता है, लेकिन हल नहीं मिलता । बेकाबु दूर करने के उपाय में डाक्टर मक्खनलाल रोज अपना फर्निचर

ही बदला करते हैं जिससे कि 'शो' अच्छा हो जाए मगर 'शो' न बन सका । साइन बोर्ड से उनकी डिगरियां रंग की पपडी उतर जाने के कारण गायब हो गयी थी। आते जाते लोगों की जब उसपर नजर पडी तभी आट भरते । इतने पैसे कभी न आ सके कि साईन बोर्ड नया बनवा लेते इस दुनिया में ऐसे कितने लोग हैं जो शिक्षित होकर भी बेकार घूम रहे हैं ।

गोरख धन्धे :-

आर्थिक स्वल्पता और परवशता जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप है । पढ लिखकर भी बेरोजगारी, गृहस्थी का दायित्व मनुष्य को निराश कर देते हैं । "रोटी रोजी के लिये मन मे ना ना विकल्प पलते हैं, नई नही तरह की तजवीजें बनती है और ये गोरख धन्धे केवल मन के ख्याली पुलावा बनकर रह जाते हैं ।"[28] यह कहानी मुख्य रुपसे अर्थ की स्थितिपर निर्भर करती है । कहानी का नायक सतीश शिक्षित रहकर भी अपने परिवार के साथ आर्थिक थपेडों से जूझ रहा है । नौकरी के तलाश में अबतक वह अपने पत्नी के गले के सब गहनों को बेच चुका है । आज उसके पास नौकरी के लिए अर्जियाँ लिखने के लिए स्याही भी नही मिल पाती है ।

सतीश हर समय कुछ काम करने की सोचता है, लेकिन उसका मन चंचल बन चुका है । वह बात को आधाही सोचता है । अंत में वह इस गरिबी से और परिवारमय जीवन से तंग आकर अपने आप को काँग्रेस का सदस्य बनकर जेल जाना चाहता है और बच्चों को अनाथालयमें रखना चाहता है । नागरजीका यह

स्वातत्र्यपूर्व काल का काल्पनिक समाधान स्वतन्त्र भारत की कल्पना से भी बाहर है । 'गोरख धन्धे' इस कहानी में नागरजी ने बेरोजगार व्यक्ति की विवशता को मर्मस्पर्शी रंग और आकार दिया है ।

सिकंदर हार गया :-

" सिकंदर हार गया ' इस कहानी में लेखक ने एक नये ढंग के साथ आर्थिक समस्या को उजागर किया है । कहानी का नायक जीवनलाल आर्थिक परिस्थिति के कारण अपने मित्र के सहपाठी शम्भुनाथ के प्रकाश ब्रिक वर्क्स में सौ रुपये में नौकरी करता है । जीवनलाल की ईमानदारी, व्यवहार और कठिण परिश्रमी वृत्ति से शम्भूनाथ और उसकी पत्नी की धनमें बढ़ोतरी होती है । इससे शम्भूनाथ की पत्नी जीवनलाल को भटट्े की नौकरी से हटाकर अपनी जायदाद और अपने पैतृक काम धन्दे का मॅनेजर बनाकर उससे पूरा विश्वास दे बैठती हैं ।"जीवनलाल एक खूब सूरत महत्वाकांक्षी व्यक्ति होने के कारण अपनी दुराचारी वृत्ति का दास है ।"[29] वह शम्भूनाथ की पत्नी के साथ अनैतिक सबन्ध रखता है । इससे फायदा उठाकर वह अपना स्वतन्त्र धन्धा करता है । जीवनलाल शम्भुनाथ की पत्नी के पैसे के बलबूतेपर रेल्वे की इमारतें बनाने का काम लेता है । इस तरह वह एक बड़ा आदमी बनता है । लेखकने यहाँपर इन्सान की इन्सानियत पैसों के लिए किस तरह खो जाती है इसका चित्रण किया है ।

जीवनलाल का विवाह एक विधवा लड़की के साथ होता है क्योंकि वह उसकी होने वाली बच्चे की माँ थी । पत्नी लीला को वह हमेशा शक की नजरों से देखकर

उसके पतिव्रतता को ठेंच पहुचाता है । इससे बदला के लिएं लीला अपनी सहेली मिसज कौल के पति के साथ झूठा सबन्ध रखाकर अपने पति के अहंता को चोट पहुँचाती है । इन्सान पैसो के खातिर खुद गिरता है और दूसरों को भी गिराता है इसका जीता जागता उदाहरण यह कहानी है ।

गिरहकट :-

यह अमृतलाल नागर की कहानी मध्यवर्गीय और निम्नवर्गीय लोगोंकी आर्थिक जीवनपर प्रकाश डालनेवाली हास्य व्यंग्यात्मक कहानी है । इस कहानी में आर्थिक समस्या उभरकर आयी है ।

कहानी का नायक मदन एक राजदूतावास के स्थानीय दफ्तर में विदेशी मेहमानों के सन्मान में एक बडी शानदार दावत हुई थी । आर्थिक स्थिति के कारण उस दावत से मदन शराब की बोतलें चुराकर कुछ बेच देता है और कुछ घर ले आता है । उस पैसोंसे वह अपने पडोसियों को दावत देना चाहता है । लेखक ने इस कहानी के द्वारा मध्यवर्गीय लोगों का जीवन और निम्नवर्गीय लोगोंका जीवन एक साथ किसतरह मेल खाते हैं इसका चित्रण किया है । साथ ही प्रस्तुत कहानी में छिपी हुई रिश्वत की समस्या को उजागर किया है । इस कहानी का शुक्ला सी.आय. डी. विभाग का कर्मचारी हैं । वह रिश्वतखोर हैं । उनसे भी दो कदम आगे रिश्वत खोरोंका भी जेब काटनेवाले गिरहकट का लेखक ने बड़ी हास्य व्यंग्य के साथ चित्रण किया है ।

शुक्लाजी का जेब काटनेवाला गिरहकट इनके घरमें चोरी करते वक्त पकडा जाता है । वह बी.ए.पास है मगर नौकरी न मिलने से यह बुरा काम करता

है । पडौसी रजिया उस गिरहकट से कहती है "हम तुम्हे पुलिस के हवाले देंगे । तो वह कहताहै,"जैसी आपकी मर्जी अभी थोडे दिन बचना चाहता था । अगर छोड देंगे तो मेहरबानी होगी । क्योंकि मेरा एक साथी जेल में है, उस की वाईफ इण्टर का इम्तहान दे रही है मेरे दम पे वो बेफिकर है । फिर रजिया पूछती है कि चोर की पत्नी पढकर क्या करेगी ? वह गिरहकट जबाब में कहता है नौकरी करलेंगी । हस्बैंड जेल जाएगा तो भूखी नही मरेगी ?"[30] गिरहकट स्वयं सहज भाव से समर्पित होकर अपना अपराध बखानता है और समझौता करता है । लेखक का मन्तव्य स्पष्ट है कि "पाप से घृणा करो, पापी से नहीं और जब सब पापी हो तब कौन किस को सजा देगा ?"[31]

मल्का टुरिया का बेटा :-

अमृतलाल नागरजी ने इस कहानी के अंतर्गत एक ही परिवार में आर्थिक स्थिति के कारण होनेवाली समस्या का चित्रण किया है । प्रस्तुत कहानी द्वारा लेखकने यह कहने की चेष्टा की है, कि इन्सान रुपयों के खातिर अपना खून का रिश्ता भी भुला देता है ।

कहानी के चौबे बनारसीदास अपने पिता की कमाई ऐयाशियों में उडाता है । अब बनारसीदास को अपने मंझले बेटे का लड़का राधेबिहारी खतरनाक साबित हो रहा है ।क्योंकि वह चाहता है कि बनारसीदास के ऐयाशियोंने अबतक सिर्फ एक हवेली बची है । वह भी मेरे हाथसे नही छूटे । बनारसीदास की इस जायदाद के पीछे उसका पोता लगातार पडा है । इसके लिया वह अपने दादा बनारसीदास से दस्तखत

चाहता है । पर बनारस नही देना चाहता । इसलिए राधे बिहारी बनारसीपर अत्याचार करता है । उसे पीटता है उसे खाना नही देता । यह मल्का टुरिया को सहा नही जाता । उसे बूढ़े बेटे की तरह अपने आंचल की छांव देते हुए मल्का टुरिया राधे बिहारी को नोचती है । इस कहानी में नागरजी की संवेदना शुष्क कम और आर्द्र अधिक है । इस में पोते का जायदाद का लोभ और बूढ़े बाबाकी जिद प्रतिद्वंदी है ।

(ई.) **धार्मिक समस्या** :-

नागरजी की कई कहानियाँ धार्मिक समस्याओंपर भी आधारित हैं । धर्म भारतीय संस्कृति और समाज का एक सनातन अंग रहा है । प्राचीन काल से धर्म भारतीय सामाजिक जीवन को निर्देशित तथा नियंत्रित करता रहा है । जिससे नागर जी भी प्रभावित होते हैं । वे अपनी रचनाओं में एक ओर भारतीय धर्म में प्रचलित आडम्बरों, दुराचारों और विकारोंको यथार्थ रुपसे अंकित कर उनपर प्रहार करते हैं और दूसरी ओर भारतीय धर्म आध्यात्मिक शक्ति को उद्घटित करते हैं।

बंगाली वैष्णव :-

अमृतलाल नागरजी की यह कहानी धार्मिक समस्या के अंतर्गत आती है । इस कहानी में लेखक ने सामाजिक यथार्थ का चित्रण किया है । साथ ही साथ बंगाली भाषा का प्रयोग किया है ।

कहानी का नायक गुजराती है । वह सिगरेट खुले आम पीने की अपनी बुरी कही जानेवाली आदत पर एक गुरुजन का महत्वपूर्ण आदेश सुन रहा था इसी बीच उसे हरि

कीर्तन की ध्वनि सुनाई पडती है । वह कीर्तनकार के पास जाता है । कीर्तनकार वेष्णव है । वह अपना पेट भरने के लिए भगवान का स्मरण करता रहता है । कथानायक को देखकर वह दंग रह जाता है, उसे लगता है कि यह हमारे मुख का है । वह अपने भाषा में कहता है,– "एक्टू पॉचशा देवने गोसाई ?"[32] इससे कीर्तनकार को कथानायक अपनी जेब से एक पैसा निकालकर देता है । कर्तनकार इस जगह छोड़कर वृन्दावन जाना चाहता है क्योंकि यहाँ के लोग ईश्वर के नाम पर दान नहीं करते । वृंदावन में तो लोग ईश्वर को मानते हैं, वहाँ ईश्वर धाम है लेकिन जाने के लिए कीर्तनकार के पास रुपये नही हैं । इसलिए वह कथानायक के पास रुपयों की मांग करते हुए कहता है,–" भगवान श्री राधागोपालने जैसे मेरा कष्ट हरने के लिए ही आपको यहाँ भेजा है । मुझे तो स्वयं श्रीकृष्ण महाराजने आपके पास भेजा है । इसलिए आपके शरणको छोड़कर मै और कहीं भी न जाऊंगा आप ही मेरे कष्ट हरेंगे ।"[33] लेखक ने इस कहानी में उन लोगोंपर व्यंग्य किया है जो लोग धर्म के नामपर भगवान के नामपर अपनी बेकारी दूर करने की कोशिश करते हैं ।

जन्तर मन्तर :-

प्रस्तुत कहानी का विषय है निम्नवर्गीय समाज का व्यक्तिगत जीवन और उनके विश्वास अन्धविश्वासों की छाया में किसतरह पतले हैं । धूर्त लोग धार्मिक आडम्बरों में लोगों को कैसे लूटते हैं इसका चित्रण किया है । जन्तर मन्तर द्वारा चमत्कारिक रुपसे अशिक्षित और गरीब लोगोंको ठगना उनके लिये सामान्य बात है इस जन्तर मन्तर का चमत्कार इस कहानी के माध्यम से वर्णित किया है ।

"नागरजी जिस वर्ग के जिस पात्र का नक्शा खींचते हैं, उसके जीवन संस्कारों और बुध्दि का सजीव वर्णन बडी सफाई से करते जाते हैं । एक प्रकार से वे परकाया प्रवेश में सिध्दहस्त है ।"[34] कादिरमियाँ और पीरबख्स बरफ बेचते हैं, दोनों में नोंक-झोंक हो गयी क्योंकि ग्राहक कादिरमियाँ की बर्फ छोडकरपीरबख्स से सस्ती बर्फ खरीदने लगें और यही बात कादिर मियाँ को खटकती है । इसलिए वह उससे बदला लेना चाहता है । मगर शाहजी की मार्फत जनतर मन्तर द्वारा तावीज बनाकर । शाहजी के चमत्कारों की ढंग एक अलग है ।" वे फरिश्ते हैं । फरिश्ते । अभी तो दरम भर में तुम्हे विलायत पहुँचा दे औरसारे विलायत को लाकर ऐशबाग के रामलीलावाले मैदान में बसा दे ।"[35]

जन्तर मन्तर के सारे नुस्खें को नागरजी की कलमने उतार दिया है । कादियमियां ने तावीज के लिए वे शाजी मौलवी के हरबात को मानता है । शाहजी कहते हैं-"एक पैसे का गोश्त खरीदकर और कडुए तेलका एक चिराग तश्तरी में रखकर किसी चौराहे पर रख देना और कल सवेरे सवागज लाल कपडे में बीस आने पैसे और एक ताज फुल ले आना मैं कल रात मसान जाऊंगा वहीं सब ठीक हो जाएगा । परसो सवेरे तुम्हे ताबीज दे दूंगा । अल्ला चाहेगा तो दो दिन में मूजी के पैर उखाड जायेंगे ।"[36] और यही चमत्कार गरीब का धन और श्रध्दा लूटकर भी उसे मार खाने से नबचा सके । कादिर मिया शेखी में पीरु से भिड़े तो हडड्ी पसली चूर हुई । सिर फुटा और अस्पताल पहुँच गए, किन्तु शाहजी के पास उत्तर तैयार है । दो इल्मो की लडाई छिड गई । इस धार्मिक अदा को नागरजीने व्यंग्य के साथ स्पष्ट किया है ।

गोबरु और गुबरैले :-

यह नागरजीकी धार्मिक समस्यापर आधारित कहानी है । धर्म को सर्वोपरि माननेवाले स्वार्थान्ध लोगों काएंव धर्म के प्रति आस्था और अनास्था रखनेवाले लोगों के जीवनपर यथार्थ चित्रण लेखकने यहाँ खड़ा किया है ।

कहानी में बड़े बाबू हर समय भारतीय संस्कृति के बारें में सोचते रहते है । वे गांव में लाऊड स्पिकर बजवाना नही चाहते फिल्म गानों के लिए उसे वे संस्कति के खिलाफ समझते है । लेकिन गांव के लाला गोबरु को कौन समझाए? उन्हे तो रामायणों का इश्क है । वे हमेशा लाऊड स्पीकर के माईक पर रामायणों का जप करते रहते हैं । वह गांव केलोगों को पसंत नही क्योंकि उस समय मार्च अप्रैल महीने का सम था । उन दिना गांव के लडकों की परिक्षाएँ चल रही थी । इसलिए वे उनसे लाऊड स्पीकर का प्रयोग न करने के लिए कहते है परंतु वे कहते हैं " ये कैसे हो सकता है ? धरम का मामला है । रामजी का जस फैलता है ।" [37] उनसे कहा गया किरामजी का जस ऐसही फैला हुआ है, उन्हें लाऊड स्पीकरों के सहारे की आवश्यकता नही है ।लेकिन वे नहीं मानते । वे धर्म ही सर्वोपरि मानते हैं । इसी अन्ध विश्वास रुपी धर्म को नागरजीने इस कहानी द्वारा चित्रित किया है ।

दफीने की खुदाई :-

यह नागरजी की धार्मिक एवं सहज प्रवृत्ति अफवाह उडानेवाले लोगोंपर आधारितहैं । यहा हरजाति अपनी हर इच्छा को भगवान की इच्छा मान लेती है

कहानी में लेखक ने अफवाहें पर जोर दिया है । हुआ यह कि लखनऊ में शाही खजाना खुलने लगा । गली गली, शहर के कोनेकोने में हर शख्स

जिनके पास दादाजाई जायदाद थी, सभी यही सोचने लगे किहो न हो, अमारे घर करोड नही तो लाख अशफिर्या का घड़ा जरुर गढ़ा है । लोग मौलवी ओ, पडीतोंके पास अपने जन्मपत्रिकाएं दिखलाने लगे और पूछने लगे कि हमारे यहा घडा है या नही मौलवीओ, और पंडीतो के झूठ बातपर लोग व्याकूल हो गए । जैसे लोगोंके दिलपर अंधविश्वास का भूत सवार हो गया था । लोग मौलवी और पंडीतो को भगवान समझने लगे । इन्ही अन्धविश्वास रुपी समाज में फैली अफवाहें पर लेखकने जोर दिया है । डा. राध्येश्याम गुप्त के अनुसार " कामरु कमच्छा की देवी को सिध्द करनेवाला बंगाली पंउित सुरमा का प्रयोग कर सब कुछ बता देनेवाले मौलवी साहब, दोनों की परस्पर स्पर्धा एवं अपने ज्ञान को सिध्द करने की होड, जिसके अन्तर्गत प्रथम का भेडिया बनना तो दूसरे का मुर्गा बनना कुछ ऐसे ही वर्णनों की प्रधानता है जिसके कारण उन व्यक्तियों अन्धविश्वास में आस्था की झांक दिखाई पडती है ।"[38]

निष्कर्ष :-

निष्कर्ष रुप में हम कह सकते है कि, अमृतलाल नागर स्वतंत्रता पूर्व लेखक है, उनकी कहानी साहित्य का केंद्र मध्यवर्गीय नागरी जीवन है । नागर का साहित्य विशाल एवं गहरा है । वे एक सामाजिक यथार्थवाद लेखक होने के साथ साथ मानवतावादी एवं ससुधारवादी भी है । उनकी सामाजिक समस्या के अंतर्गत नारी समस्या, अंधविश्वास क समव्या प्रेम की समस्या, निम्नवर्ग की समस्या, और रंगभेद की समस्याओं का सृजन हुआ है ।नागरजी की कहानियों के पात्रजीवित लगते है । उनक आर्थिक समस्याके अंतर्गत आनेवाली कहानियोंमें दयनीयता और बेरोजगारी लोगोंका

चित्र मिलता है । राजनीतिक समस्या की कहानियोंमें उन्होंने देश के साथसाथ सारे विश्वका भी विचार किया है और उससे होनेवाले सामाजिक विसंगतियों को संवारने की कोशिश भी की है ।

लोगों में झूठ अफवाहें उड़ाने की एक आदत होती है उसे वे एक व्यंग्य द्वारा प्रस्तुत करते है । अफवाहें, अन्धविश्वास एवं धार्मिक आडंबरो प्रति मोह समाज को खोकला बना देता है इसी यथार्थ सत्य को उन्होंने जड से उखाड फेंकने की कोशिश की है ।

संदर्भसूची

1. मिश्र प्रकाश चंद्र - अमृतलाल नागर की उपन्यास साहित्य - पृ. 231
2. डॉ.बत्रा सुदेश - अमृतलाल नागर व्यक्तित्व कृतित्व एवं स सिध्दांत - पृ. 339
3. डा.वार्ष्णेय रघुवर दयाबा - हिन्दी कहानी : बदलते प्रतिमान - पृ. 96
4. डा.बत्रा सुदेश - अमृतलाल नागर - व्यक्तित्व कृतित्व एवं सिध्दांत - पृ. 199
5. नागर अमृतलाल - सिकंदर हार गया - पृ. 33
6. वही पृ. 14.15
7. नागर अमृतलाल - मेरी प्रिय कहानियां पृ. 143
8. डॉ.बत्रा सुदेश - अमृतलाल नागर व्यक्तित्व, म कृतित्व एवं सिध्दांत पृ. 182
9. डा.वार्ष्णेय लक्ष्मीसागर - आधुनिक कहानी का परिपार्श्व - पृ. 7।
10. नागर अमृतलाल - सिकंदर हार गया - पृ. 78
11. डा.सुमन कुमार 'सुमन'- कहानी और कहानीकार - पृ. 45
12. नागर अमृतलाल - हम फिदा ए लखनऊ - पृ. 94
13. वही पृ. 95
14. नागर अमृतलाल भारतपुत्र नौरंगीलाल पृ. 28
15. वही - पृ. 33
16. डा.सुदेश बत्रा - अमृतलाल नागर : व्यक्तित्व, कृतित्व एवं सिध्दांत-पृ.195
17. नागर अमृतलाल - मेरी प्रिय कहानियां - पृ. 116
18. नागर अमृतलाल - भारतपुत्र नौरंगीलाल - पृ. 61
19. डा.बत्रा सुदेश - अमृतलाल नागर - व्यक्तित्व कृतित्व एवं सिध्दांत - पृ.202

20 नागर अमृतलाल - सिकंदर हार गया - पृ 111-112

21. डा.बत्रा सुदेश - अमृतलाल नागर : व्यक्तित्व कृतित्व एवं सिध्दांत - पृ. 201

22. डा. वार्ष्णेय लक्ष्मीसागर - आधुनिक हिन्दी कहानी का परिपार्श्व - पृ.71

23. नागर अमृतलाल - सिकंदर हार गया - पृ. 33

24. नागर अमृतलाल - एटम बम - पृ. 11

25. डा.बत्रा सुदेश - अमृतलाल नागर - व्यक्तित्व कृतित्व एंव सिध्दांत - पृ. 201

26 वही पृ. 201

27 नागर अमृतलाल-पीपल की परी - पृ. 70

28. डा.बत्रा सुदेश - अमृतलाल नागर : व्यक्तित्व कृतित्व एवं सिध्दांत - पृ. 189

29 वही - पृ. 198

30 नागर अमृतलाल - सिंकंदर हार गया - पृ. 28

31 डा.बत्रा सुदेश- अमृतलाल नागर - व्यक्तित्व कृतित्व एवं सिध्दांत पृ.199

32 नागर अमृतलाल - सिंकंदर हार गया - पृ. 65

33. वही पृ. 70

34. डा.बत्रा सुदेश - अमृतलाल नागर - व्यक्तित्व कृतित्व एवं सिध्दांत- पृ. 184

35 वही पृ.184

36 नागर अमृतलाल - हम फिदाए लखनऊ - पृ. 115

37 नागर अमृतलाल - भारतपुत्र नौरंगीलाल पृ 40-41

38. डा.बत्रा सुदेश - अमृतलाल नागर ' व्यक्तित्व कृतित्व एवं सिध्दांत पृ. 193